स्वैच्छिक शिक्षक मंच ,जौनपुर ब्लाक,टिहरी गढ़वाल की बैठक

दिनांक 25 सितम्बर 2016,रविवार

विषय- कक्षा शिक्षण में कठपुतली का इस्तेमाल

जौनपुर ब्लाक में ऐसे बहुत से शिक्षक साथी हैं जो लगतार प्रयास रत हैं कि उनके विद्यालयों में कुछ नवाचारी शिक्षण के प्रयोग हों जिससे उनके विदयालयों में पढ़ने वाले बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा मिल सके |और वे इस दिशा में लगातार कोशिश भी करते रहते हैं | अपनी कोशिशों को और आगे ले जाने के उद्देश्य से उनमे से ही कुछ शिक्षक साथियों ने अपने अनुभवों को साझा करने के लिए एक स्वैच्छिक मंच का भी गठन किया हुआ है | इस मंच में यहाँ के उपशिक्षा अधिकारी भी बड़ी ही सक्रियता से प्रतिभाग करते हैं जिससे शिक्षकों को और भी ज्यादा प्रेरणा मिलती हैं | ये समूह पिछले कुछ समय से सक्रिय है और माह में एक बार अपनी बैठक करता है | इसी क्रम में सितम्बर माह के अंतिम रविवार को समूह की बैठक का आयोजन हुआ | इस बार बैठक को देहरादून में आयोजित किया गया | क्यूंकि काफी शिक्षक रविवार होने के चलते अपने घर में आये हुए थे | इस बार की बैठक में विषय था "कठपुतली का कक्षा शिक्षण में उपयोग" | सत्र बहुत ही अच्छा रहा |

संदर्भ व्यक्ति के बारे में - इस सत्र को श्रीमती मनीषा रावत ने संचालित किया | जो कि राजकीय प्रा० वि० जाखन ,देहरादून में कार्यरत हैं | इन्होने कठपुतली निर्माण व उपयोग का प्रशिक्षण सी० सी० आर० टी ० दिल्ली , गुवाहटी

से लिया है | ये 1999 से कठपुतलियों के निर्माण व प्रशिक्षण देने से जुडी हैं | इस सत्र में इनके साथ श्रीमती सीमा अग्रवाल प्र० अ ०, राजकीय प्रा० वि० जाखन व श्रीमती मुन्नी पिमोली स०अ० राजकीय प्रा० वि० जाखन व संगीता इस्थवाल स०अ० प्रा०वि० राजपुर ने भी सहयोग दिया |

विषय के बारे में - कठपुतली कोई ऐसी विधा नहीं है जिसके विषय में हम लोग जानते नहीं हो | लेकिन शिक्षण में इसका उपयोग कैसे हो ये हमारे लिए एक नया अनुभव हो सकता है | सत्र के दौरान कठपुतलियों के प्रकार , निर्माण और कठपुतली का उपयोग पर मुख्य रूप से बात चीत हुई |

सत्र संचालन- सत्र की शुरुआत संजय सेमवाल ने सभी का स्वागत करके की | इसके बाद सभी प्रतिभागियो का परिचय किया गया | वैसे तो सभी साथी एया-दुसरे से परिचित ही हैं लेकिन इस सत्र में कुछ नए साथी भी शामिल थे इसलिए यह महसूस हुआ कि परिचय का एक दौर रखा गया | इसके बाद सत्र आज की सन्दर्भदाता श्रीमती मनीषा को दिया गया |

मनीषा ने सभी का स्वागत करते हुए सभी अपने बारे में बताया | साथ ही अपने कठपुतली से जुड़े हुए अपने लिए और दिए प्रशिक्षणों के बारे में विस्तार से बताया | इसके बाद उन्होंने अपनी बात को आगे बढाते हुए बताया कि कठपुतलिया कितने प्रकार की होती हैं |

छड कठपुतली- इसमें किसी चरित्र को कागज से बना कर उसके पीछे एक लकड़ी की छड़ी को जोड़ दिया जाता है | इसको बनाना आसान है तथा अपनी पाठ्य पुस्तकों के चरित्रों से आसानी से जोड़ा जा सकत है |

धागा कठपुतली – इन कठपुतलियों का निर्माण बहुत तरीकों जैसे कागज , बोर्ड या कपड़ों से किया जा सकता है | इसमें कठपुतलियों के अंगों को धागों से जोड़ा जाता है | और धागों की सहायता से ही उनका सञ्चालन होता है |

इन कठपुतलियों का निर्माण और सञ्चालन मुश्किल होता है |

दस्ताना कठपुतली- पुराने जुराब में रुई भर कर किसी चरित्र को इसके बाहर चिपका कर कठपुतली बनाई जाते है | और दस्ताने के अंदर हाथ डालकर इसका संचालन होता है | इसको बनाना और सञ्चालन आसान है तो कक्षा शिक्षण में इसका उपयोग किया जा सकता है |

ऊंगली कठपुतली – कागज पर छोटे -छोटे चरित्र बना कर उसके पीछे कागज का छल्ला बना कर उसको उंगली में पहनने लायक बनाते हैं फिर अलग – अलग उंगली में अलग चरित्र को पहन कर उपयोग किया जाता है | ये काफी आसान व कक्षा शिक्षण में उपयुक्त है|

इसके बाद मनीषा जी ने छड कठपुतली के उपयोग से कक्षा 5 की पाठ्य पुस्तक से "गौरा देवी" और कक्षा २ की पाठ्य पुस्तक से "चल तुमडी बाटे बाट" पाठ का मंचन किया | इस मंचन में उनके साथ आये हुई अन्य शिक्षिकाओं ने भी सहयोग किया | मंचन के साथ इस बात पर भी चर्चा हुई कि हम कक्षा में इस्तेमाल किस तरह से करें | कक्षा कक्ष में कठपुतली प्रदर्शन के बात पाठ पर बात करनी उतेनी ही जरुरी है | केवल कठपुतली प्रद्र्ह्सन से हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि बच्चों में अपेक्षित दक्षताएं आ गयी हैं |

इसके बात मनीषा जी ने सभी प्रतिभागियों को एक कघ पर अपने मन से कोई भी अपने पसंद का चरित्र निर्माण करने को कहा फिर कैसे उसको हम छड कठपुतली में बदलें ये शिखाया | इस प्रकार सभी प्रतिभागियों ने एक एक छड कठपुतली का निर्माण किया | उसके बाद एक कहानी बनाई गयी जिसमे सभी प्रतिभागियों को अपने अपनी कठपुतली के साथ प्रतिभाग करते हुए कहानी को आगे ले जाना था | इस गतिविधि को सभी ने बहुत पसंद किया |

इसके साथ जौनपुर की एक शिक्षिका श्रीमती मीनाक्षीजी ने अपने अनुभवों को साझा किया कि वे किस तरह से उंगली कठपुतली का उपयोग करती हैं | इसके बाद मनीषा जी ने सभी का सत्र में प्रतिबाग करने के लिए धन्यवाद किया |

जौनपुर के उपशिक्षा अधिकारी रावत जी ने सभी शिक्षकों से अपील की ,कि वे इस विधा को अपने विद्यालयों में उपयोग करने की कोशिश करें | और मनीषा जी का बेहतरीन सत्र के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया| फाउंडेशन के श्री कांडपाल जी ने मनीषा जी धन्यवाद यह कह कर दिया कि वे बहुत ही रचनावान व ऊर्जावान शिक्षिका हैं और अपनी इस विधा से अपने स्कूल में और अपने साथी शिक्षकों को लाभ पहुंचा रही हैं | सभी शिक्षकों से कहा कि हमें ये समझना पड़ेगा कि शिक्षण में आज की जरूरतें क्या हैं | हम बच्चों को केवल एक ही तरह से पढ़ा नहीं सकते हमको और नवाचारी तरीके भी ढूंढने होंगे | आज हम एक नए तरीके से रूबरू हुए हैं हमें प्रयास करने होंगे कि हम असी और बहुत सारे तरीकों को ढूंढे और उनका प्रयोग कक्षा शिक्षण में करें |

प्रतिभागियों की सूची

क्रम	नाम	विद्यालय	मो.न.
1-	मुनेंदर सिंह राना	उ० प्रा०वि० सरताली	8979897838
2-	दीपक बढ़ानी	प्रा०वि० बांधचोक	9690297909
3-	महादेव प्रसाद	प्रा० वि० लालोतना	9720924806

4-	सुरेंदर सिंह रंगार	प्रा०वि० देवन घंसी	9897416920
5-	मनोज जोशी	प्रा० वि० देवन घंसी	9634874510
6-	अजय पाल सिंह	प्रा०वि०देवन घंसी	8393837999
7-	मीनाक्षी उनियाल	प्रा० वि० भवान	8454607907
8-	भावना कर्णवाल	प्रा० वि० रावतु कि बेली	8859865753
9-	भावना नेगी	प्रा० वि०बिच्छू	9897911081
10-	चंद्रकला नेगी	प्रा० वि० लालोतना	9675043702
11-	नीलम थपलियाल	प्रा०वि०देवन घंसी	7579422215
12-	यशबीर शिंह रावत	उप शि० अधि० जौनपुर	9411575905
13-	मनीषा रावत	प्रा० वि० जाखान	7060473077
14-	सीमा अग्रवाल	प्रा० वि० जाखान	
15-	मुन्नी पिमोली	प्रा० वि० जाखान	
16	संगीता इस्थवाल	प्रा० वि० राजपुर	8126222969
17	कैलाश कांडपाल	अ०प्रे०फ़ा० दे०दुन	9456591213
18	संजय सेमवाल	अ०प्रे०फ़ा०टिहरी	9456591212

धन्यवाद |